स्कूल से बाहर स्कूल की पढ़ाई

– अनूप बडोला

बच्चों ने पहली बार अपने शब्दों के भण्डार में कुछ नए शब्द, जैसे लॉकडाउन, जिसके कारण वे घरों में बंद थे, कोरोना या कोरोना वायरस, जो कोई भयंकर बीमारी है, मास्क, जिसे पहन कर सब लोग घूम रहे थे जोड़े।

लॉकडाउन के दौर में न स्कूल खुले, न बच्चे स्कूल आ पाए, न शिक्षक–शिक्षिकाएं। आगे मालूम नहीं यह सिलसिला कब तक जारी रहेगा। चिंताएं दोनों तरफ हैं शिक्षक–शिक्षिकाओं की और माता–पिता की। बच्चों का ज्ञान निर्माण का दायरा स्कूल की चार दीवारें ही हैं या जहां बच्चे हैं, वह भी हैं। एनसीएफ–2005 के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य किसी बच्चे के स्कूली जीवन को उसके परिवेश, यानि कि घर, आस–पड़ोस के जीवन से जोड़ना है। इसके लिए बच्चों को स्कूल में अपने वाह्य अनुभवों के बारे में बात करने का मौका देना चाहिए। जो NCF के मार्गदर्शी सिद्धांत कि "किताबों के बाहर ज्ञान निर्माण को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना" के आलोक में है और यह जोड़ना कभी अनायास व कभी सायास हो सकता है साथ ही उसके इन अनुभवों को सुना जाना चाहिए। जिससे बच्चे को लगे कि शिक्षक उसकी अर्जित की गयी बात को महत्त्व दे रहे हैं। शिक्षा का दूसरा प्रमुख लक्ष्य है "बच्चे द्वारा नए ज्ञान का सृजन" इसके लिए बच्चों को स्कूल में विभिन्न तरह के अनुभवों का अवसर देकर इस प्रक्रिया को सुगम बनाने की बात कही गई है। लॉकडाउन के इन अनुभवों को, जो सामान्य स्थिति में कम ही मिल पाते, उनको स्कूल के लिए एक अवसर के रूप में लेकर उस पर नियोजित काम करना।

सभी चिंतित हैं कि बच्चे कैसे व क्या सीख रहे होंगे? उनका सीखने का क्रम रुक गया होगा, किताबें पढ़ रहे होंगे या नहीं? यदि नहीं पढ़ रहे होंगे तो आगे की पढ़ाई कैसे होगी? कितना कठिन हो जायेगा। क्या वास्तव में बच्चा स्कूल में क्या कुछ नहीं लेकर आ रहा होगा? क्या छूट रहा होगा। यह कह पाना तो मुश्किल है कि क्या छूट रहा होगा लेकिन बच्चा क्या लेकर आ रहा होगा इस पर बात की जा सकती है। लॉकडाउन के इस दौर में हमारे स्कूलों में जहां से बच्चे आ रहे हैं वे या तो हमारे छोटे

फोटोः पुरूषोत्तम ठाकुर

छोटे गांव से हैं या शहरों–कस्बों से आ रहे हैं। उन समाजों में बच्चों ने जो सारी दुनिया ने देखा वह तो देखा ही लेकिन इन बच्चों ने उससे कहीं ज्यादा देखा जो शायद वृहतर समाज ने नहीं देखा होगा। इन समाजों, विशेषकर जब वे समाज के सबसे निचले पायदान से हैं, के सामान्य दिनों के अनुभव भी बाकी सारे समाजों से बहुत अलग होता है। जो उनके सामने अधिगम व स्कूल अधिगम दोनों को प्रभावित करता है। स्कूल में होने वाले अधिगम को हम समझ व जांच कर पाते हैं लेकिन परिवेश का सामान्य अधिगम के लिए न तो सामान्यतः स्कूल में कोई सायास प्रयास हो पता है कभी अनायास ही कुछ अनुभव आता है। आज जब स्थितियों के चलते हम ऑनलाइन पढ़ाई की भी बात करने लगे हैं जिसका उद्देश्य शिक्षक व बच्चों का कनेक्ट बनाने का है, वो कई कारणों से कठिन व अव्यावहारिक प्रतीत होता है। इन समाजों में जहाँ ऐसे साधनों की कमी एक मुद्दा रहा वहीं यह समाज में समता का मुद्दा भी रहा है।

लॉकडाउन में इस दौर में इन समाज के बच्चे कुछ विशेष अनुभव लेकर आ रहे होंगे। जैसे उन्होंने पहली बार पुलिस की बार–बार सायरन गाड़ी की आवाजें सुनी होंगी, पुलिस को उनकी बस्तियों में आते व पूछते हुए देखा

होगा, उनके घरों के बाहर या किसी गली में दवाई छिड़कते हए देखा होगा, किसी की ज्यादा तबियत खराब होते व उसे एम्बुलेंस में ले जाते हुए देखा होगा। उस इलाके के प्रधान या पार्षद,वार्ड मेम्बर को कोई लिस्ट बनाने हुए देखा होगा, कुछ लोगों को उनके घरों में खाना या राशन लेकर आते हुए देखा होगा, ये क्या किसी विषय का भाग नहीं हैं? क्या जब बच्चे स्कूल में आये तो बच्चों की आयु व कक्षा के अनुसार समाज में पुलिस की भूमिका, अस्पताल की भूमिका, पार्षद/वार्ड मेम्बर की भूमिका, सरकार चित्र, कहानी, बातचीत व चर्चा नहीं की जा सकती है। इन अनुभवों में बच्चे सामाजिक चेतना, समाज के मुख्य लोग और उनकी भूमिकाओं के बारे में जाना जिसे स्कूल खुलते ही सुबह की सभा का हिस्सा बनाया जा सकता है। इन पर बच्चों से कई चित्र व कहानियां बनवाई जा सकती हैं जो भाषा की कक्षा का हिस्सा हो सकती हैं।

उन्होंने देखा होगा कि जो पिता व माँ, जो रोज काम पर जाते थे लेकिन उन दिनों में नहीं जा रहे थे, देखा होगा पिता को पैसे खत्म हो जाने और माँ को राशन खत्म हो जाने पर चिंतित होते हुए, लॉकडाउन से पहले की माता पिता की बातें और लॉकडाउन में उनकी बातें, उनकी मीठी–खट्टी झिड़कियां, उनका इस दौरान कोई पसंद की चीज नहीं खा पाना, कभी–कभी भूखे सो जाना, इस दौर में उन्हें मौका मिला होगा दादा, दादी, नाना, नानी, ताया, ताई से कई नयी पुरानी कहानियां सुनने की जिसमें जहाँ लोक कथाएं होंगी, भूत कथाएं होंगी तो जिन्होंने प्लेग जैसी महामारी का दौर देखा हो उनकी कहानियां और कई लोक गीत जो तब गए जाते थे अब नहीं या वहां गांवों में अभी भी गाये जाते हैं, पर यहां नहीं गाये जाते आदि। क्या ये अनुभव किसी कहानी से कम न होंगी जिसे वे उसी क्रम, भाव, वाक्य विन्यास के साथ सुना रहे होंगे जो हम किताबों की कहानियों से अपेक्षा करते हैं। वे नयी जानी हुयी ये कहानियां/प्रसंग/लोकगीत बिना रुके कह डालेंगे और कल्पना चित्र बना डालेंगे, जो लिख सकते हैं वे लिख लेंगे।

उन्होंने देखा होगा कई नई चिड़ियों को, साफ नीला आसमान और उसमें बड़े बड़े झुंड में उड़ते पक्षी, पास के पेड़ पर कई पंक्षियों के कई घोसले और उनमें उनके नए बच्चे, तरह तरह की चिड़ियों की आवाजें, पंक्षियों के अंडे व उनसे निकलते छोटे–छोटे चूजे और फिर उनको रोज बढ़ते हुए। उन्होंने देखा होगा कई नए पौधे घरों की मुंडेरों में, कोनों में, कुछ नए छोटे–छोटे रंग बिरंगे फूल, कल तक छोटा सा उनका आम का, अमरूद का, लीची का पौधा थोड़ा बड़ा होता हुआ या फिर उनमें फल आते हुए। उन्होंने इस बीच न जाने कितने कीड़े–मकोड़ों की रोज की दिनचर्या देखी होगी, मकड़ों के बड़े–बड़े खूबसूरत जाले और न जाने क्या–क्या देखा होगा। क्या इन अनुभवों को बच्चे स्कूल में आकर रंगों, चित्रों से बता सकते हैं, क्या उनके इन अनुभवों को किसी कविता बनाने में उपयोग नहीं किया जा सकता। EVS के सारे पाठ इन्हीं अनुभवों से पूरे किये जा सकते हैं।

उन्होंने पहली बार अपने शब्दों के भण्डार में कुछ नए शब्द जैसे लॉकडाउन, जिसके कारण वे घरों में बंद थे, कोरोना या कोरोनावायरस, जो कोई भयंकर बीमारी है, मास्क, जिसे पहन कर सब लोग घूम रहे थे, सेनिटाइजर, जिसे बार बार हाथ में लगाया जा रहा था, दस्ताने, जो कुछ लोग पहन कर जा रहे थे, तरह–तरह के साबुन, जिससे बार–बार हाथ धोने के लिए कहा जा रहा था। और उनके रैपर जिसमें उनके नाम लिखे हैं जिन्हे वे यूं ही पढ़ पा रहे थे, बड़े–बड़े होर्डिंग्स जिसमें बड़े–बड़े अक्षरों में कोरोना वायरस से बचाव के लिए क्या करें व क्या न करें साथ में चित्र भी, उनके घर में आये हुए नए नए आटे, चावल के थैले जिन पर कुछ–कुछ लिखा था, उन्होंने देखा होगा हर दुकान पर एक तरह का नीले रंग का बैनर जिसमें बड़े–बड़े अक्षरों में सामाजिक दूरी लिखा था और उन्हीं दुकानों के बाहर सफेद, नीले गोले या चौकोर निशान, दुकानों के बाहर लगाई रस्सी, जिससे टॉफी का डिब्बा छू कर बताया भी नहीं जा सकता था। देखा होगा सब को सामान को घर पर लाने से पहले धोते हुए या पोंछते हुए, उन्होंने बनाये होंगे कुछ खेल जो घर के अन्दर खेले जा सकते हैं या फिर पुराने खेलों में कुछ और जोड़ा होगा, गढ़े होंगे बाहर के वे खेल जिसमें आवाज नहीं कर सकते क्योंकि लोग भगा देंगे, बनाये होंगे सुतली डिब्बों से उनके फोन। इस नए अर्जित शब्द भण्डार को स्कूल की दीवारों में जगह देकर उन्हें उन शब्दों के साथ खेलने, नयी रचनायें रचने का मौका दिया जा सकता है।

उन्होंने देखा होगा कि हर रोज माता–पिता बची हुयी राशि का हिसाब कर रहे थे कि आगे क्या सामान लाया जाय, क्या नहीं, कितना किलो आटा आ सकता है, कितना चावल, नमक हल्दी धनिया, प्याज। क्या कितना

कम लाने से कौन सी वस्तु ज्यादा आ सकती है। कुछ आई हुयी चीजें उन्होंने लीटर में देखी होंगी शायद पहली बार, अंतर पता चला होगा पहले जो वे पाव या 100 ग्राम 200 ग्राम में ही लाया करते थे, वो डिब्बा जो पहले एक या दो किलो में ही भर जाता था अब आये हुए अनाज के लिए नए कितने डिब्बों की जरूरत पड़ी होगी, कोई छोटे डिब्बे कोई बड़े डिब्बे। उन्होंने सुना होगा कि सबको एक दूसरे से कितने हाथ, कितने मीटर, दूर रहना होगा, जो कही उन्हें लिखा हुआ भी दिखा होगा। उन्होंने कुछ गोले देखे होंगे दुकानों के बाहर, कुछ वर्गाकार चिन्ह देखे होंगे। इस तरह उनके अनुभव में उनके साथ कुछ गणितीय संकल्पनाओं, जो उनकी अधिगम परिणाम का हिस्सा हैं और जिसमें उन्हें छोटा, बड़ा, दूरी, अंतर, भार व आयतन, विभिन्न आकर आदि का नया अनुभव हुआ होगा। ये उनकी हिंदी व अंग्रेजी की अगली कक्षा गतिविधियों के हिस्से हो सकते हैं।

इतना सब लेकर जब बच्चा स्कूल में आयेगा तो उस अनुभव को क्या व्यर्थ जाने दिया जा सकता है? बच्चे अपने इन अनुभवों के साथ कई प्रश्न, जिज्ञासाएं, अपनी अवधारणायें, अपने मतलब लेकर आ रहे होंगे, शिक्षक–शिक्षिका के रूप में जरूरत होगी उनके इन प्रश्नों, जिज्ञासाओं, अवधारणाओं, अर्थों को समझने व् आवश्यकता पढ़ने पर उसे गाइड करने की और उसे स्कूल की किताबों से जोड़ने की। जिसके लिए स्कूल के साथियों की बड़ी जिम्मेदारी है कि स्कूल खुलते ही बिना इस बात की चिंता किये कि सेलेबस छूट गया और उसे पूरा करना है। उसके बजाय इसी अनुभव को कम से कम 15 दिन का समय दें। उसके लिए एक कार्य योजना बनायी जा सकती है जैसे हर रोज सुबह की सभा में हर बच्चे से उनकी अपनी कहानी सुनना, पहले 5 दिन हर कक्षा में एक–एक थीम को लेकर अनुभव व कहानी सुनना साथ–साथ हर बच्चे को उन्होंने जो सुनाया उसे या तो लिखना या उस पर छात्र बनाने को कहना, दूसरे 5 दिन बच्चों के बीच बाल पत्रिका जो कोरोना के दिन पर बनायी जा सकती है पर बातचीत कर उस पर काम करना, बच्चों के बननाए चित्रों को दीवार पत्रिका के रूप में संजोना व बिग बुक बनाना। अंतिम 5 दिनों में कोरोना वायरस और उससे बचाव, शारीरिक स्वच्छता, गणितीय संकल्पनाओं आदि पर सामूहिक रूप से नाटक, गीत, कवितायें, कहानियां बनाना व उन्हें विषय के अनुसार कक्षा में उपयोग करना। इस बार का अनुभव स्कूल के साथियों के लिए हर गर्मी की व सर्दियों की छुट्टियों में इसी प्रकार बच्चों के साथ सार्थक काम करने के लिए उपयोगी होगा। ये अनुभव शिक्षकों को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के उस मार्गदर्शी सिद्धांत जिसके अनुसार "ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना ज्ञान सृजन के लिए महत्वपूर्ण क्रिया है" को साकार करने में मदद करेगा।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन देहरादून, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)

किसान

- कैफ़ी आज़मी

चीर के साल में दो बार ज़मीं का सीना
दफ़्न हो जाता हूँ
गुदगुदाते हैं जो सूरज के सुनहरे नाख़ून
फिर निकल आता हूँ
अब निकलता हूँ तो इतना कि बटोरे
जो कोई दामन में दामन फट जाए
घर के जिस कोने में ले जा के कोई रख दे मुझे
भूख वहाँ से हट जाए
फिर मुझे पीसते हैं, गूँधते हैं, सेंकते हैं
गूँधने सेंकने में शक्ल बदल जाती है
और हो जाती है मुश्किल पहचान
फिर भी रहता हूँ किसान
वही ख़स्ता, बद-हाल
क़र्ज़ के पंजा-ए-ख़ूनीं में निढाल
इस दरांती के तुफ़ैल
कुछ है माज़ी से ग़नीमत मिरा हाल
हाल से होगा हसीं इस्तिक़बाल
उठते सूरज को ज़रा देखो तो
हो गया सारा उफ़ुक़ लालों-लाल